कल्याण मनकोटी
सहायक अध्यापक, राजकीय जूनियर हाई स्कूल
चनोली, भैंसियाछिना, अल्मोड़ा

समाज के निर्माण की भूमिका भी है शिक्षक की

प्रधानाध्यापक – भुवन चन्द्र जोशी

सहायक अध्यापक – भगवती फर्त्याल

सी.आर.सी.सी. – चारू तिवारी

भोजन माता – आनन्दी चिम्याल

नामांकन – 28

अक्टूबर 2014 के पहले सप्ताह मुझे 'सपनों की उड़ान' कार्यक्रम में जाने का मौका मिला। वहां आठ–नौ विद्यालयों के बच्चे आये हुए थे। वैसे तो हर स्कूल के बच्चे तेज और प्रतिभाशाली थे पर कुछ बच्चों के चेहरे पर मुझे एक अलग ही चमक दिखी। उनसे बात की तो मालूम पड़ा यह चमक सिर्फ बाहरी नहीं है। बच्चों में गज़ब का आत्मविश्वास था। सवाल आया कि क्या है जो इन बच्चों को बाकी बच्चों से अलग कर रहा है। जब उनके स्कूल का नाम पूछा तो मालूम हुआ कि ये बच्चे मेरे एक परिचित शिक्षक साथी के स्कूल के हैं। मैंने फैसला किया कि इस स्कूल में जाकर जरूर देखूंगा कि क्या है वहां जो इन बच्चों मे इतनी ऊर्जा भर रहा है। उसी 'सपनों की उड़ान' कार्यक्रम के अंत मे जब स्कूल के उप प्रधान (वह स्कूल जहां कार्यक्रम हो रहा था) को समापन भाषण देने के लिए बुलाया गया तो उन्होंने कहा कि हम अभिवावक आप सब गुरुजनों से गुजारिश करते हैं कि आप भी वैसे काम कीजिये जैसा काम मेरे वह 'परिचित टीचर' अपने स्कूल में कर रहे हैं। एक स्कूल के उप प्रधान द्वारा एक अन्य स्कूल के टीचर की प्रशंसा करते देख मेरा यह विश्वास और पुख्ता हो गया कि कुछ तो है जो उस स्कूल में हटकर होता होगा।

एक महीने बाद मैं अल्मोड़ा जिले के एक अन्य हिस्से में पारिवारिक भ्रमण

पर गया। यह वह इलाका था, जहां मेरे उस परिचित टीचर ने कभी पढाया था। वहां उनके पढ़ाये बच्चों से बात की तो पता चला कि वहां भी उन्होंने कुछ अलग तरह से काम किया था और उनके काम के बारे में अनके बातें मालूम पड़ी।

इससे पहले मैं आपको यह बताऊं कि वो कौन सी चीजें हैं जो यह टीचर अलग तरह से करते हैं। आइये, पहले मैं इन टीचर से आपका परिचय करा दूं–

इस शिक्षक का नाम है कल्याण मनकोटी जो उत्तराखण्ड के जिला अल्मोड़ा के भैसियाछिना ब्लॉक के राजकीय जूनियर हाई स्कूल चनोली में कार्यरत हैं। उनके स्कूल में–

1. एक शीशा लगा है जिसमें हर बच्चा अपना चेहरा देखता है। साबुन पानी की व्यवस्था है जिसका उपयोग हर बच्चा करता है ताकि उनमें सफाई की आदत पड़े और यह उनके बच्चों में दिखता भी है।
2. एक नोटिस बोर्ड है जिसमें ऐसे विचार लिखे जाते हैं जिन्हें बच्चे खुद जीते हैं। उदाहरण के तौर पर... 'हम सब मिल कर काम करते हैं'।
3. सामाजिक विज्ञान को कक्षा के बाहर पढ़ाया जाता है। जैसे गांव में होने वाली फसलों की जानकारी गांव में घूम–घूम कर एकत्रित की जाती है।
4. पढ़ाने के तरीके में सबसे ऊपर है बातचीत। बातचीत के माध्यम से ही हर विषय समझा जाता है।
5. अक्सर गांव के जानकार लोगों को आमंत्रित कर बच्चों से उनकी बातचीत करवाई जाती है और इस तरह समुदाय के लोगों के ज्ञान का उपयोग भी वह स्कूल में करते हैं। इस गतिविधि से एक और चीज अच्छी होती है वह है समाज के लोगों की स्कूल में साझेदारी।
6. सबसे अनूठी बात कल्याण मनकोटी की यह है कि उनके स्कूल में हर काम में बच्चों की सहभागिता होती है फिर चाहे वह स्कूल में सफाई हो, सड़क का निर्माण हो, इकठ्ठे मिलकर भोजन करना हो या फिर किसी

भी तरह का निर्णय लेना हो। बच्चे स्कूल से जुड़ी हर चीज में सामूहिक रूप से भाग लेते हैं।

7. इसके अलावा नयी–नयी तकनीक से भी बच्चों को समय–समय पर अवगत करवाते रहते हैं। स्कूल की बड़ी कक्षाओं के ज्यादातर बच्चे कैमरे का उपयोग करना जानते हैं।

कल्याण मनकोटी के स्कूल में दो चीजें गौर करने वाली थी। पहली थी बच्चों की अपने आसपास की चीजों के प्रति समझ और दूसरी बच्चों की अभिव्यक्ति क्षमता। जिस बेबाकी और स्पष्टता के साथ स्कूल के बच्चे चीजों के बारे में बात करते हैं वह अद्‌भुत है।

जब इसका कारण तलाशने की कोशिश की गयी तो मालूम पड़ा कि कल्याण मनकोटी अपने सभी छात्रों के साथ दोस्तों जैसा व्यवहार करते हैं। हर वक्त एक दोस्त की तरह बात करते हैं। इससे बच्चों की हिचकिचाहट तो दूर होती ही है। इसका परिणाम यह होता है कि बच्चे खुलकर अपनी बात कह पाते हैं क्योंकि उनको पता होता है कि उन्हें क्या कहना है और उन्हें अपनी बात रखने की आजादी भी है।

दूसरा महत्वपूर्ण काम कल्याण मनकोटी करते हैं वो है गतिविधियों पर जोर देना। उनके पढ़ाने के तरीके से लेकर बच्चों को नयी चीजें समझाने तक वह कोशिश करते हैं कि बच्चे चीजों को करते करते सीखें न कि टीचर के जबरदस्ती सिखाने पर।

इसका उदाहरण स्कूल के हर कोने में दिखता है फिर चाहे वो क्लासरूम हो, लाइब्रेरी हो या स्कूल का आंगन। स्कूल का हर हिस्सा बयां करता है कि स्कूल में बच्चे कुछ न कुछ करते रहते हैं।

वो साथ मिलकर काम करने की ताकत समझते हैं इसलिए समुदाय को

साथ लेकर चलते हैं। समुदाय के साथ इनके रिश्ते कैसे हैं इस बात का अंदाजा इस किस्से से लगाया जा सकता है कि इनके स्कूल की एक बच्ची जिसका विवाह उसके घर वाले छोटी उम्र में करने वाले थे अब इस बात पर राजी हो गये हैं कि उस बच्ची की पढ़ाई के बाद ही उसकी शादी होगी। इसके अलावा समुदाय के साथ मिलकर कल्याण मनकोटी कुछ न करते रहते हैं ताकि समाज के लोगों को इस बात का अहसास होता रहे कि यह स्कूल हम सब का है।

सुनने में यह आसान और अच्छा लगता है कि बच्चों को कहने और काम करने की आजादी दे दो और कुछ न कुछ गतिविधि कर दो तो बच्चे खुद–ब–खुद चीजों को करने लग जाते हैं। पर यह काम हकीकत में कितना मुश्किल होता है इसका जवाब कल्याण मनकोटी कुछ इस तरह देते हैं, "सबसे मुश्किल चीज होती है अपने अहं को तोड़ना। बच्चों के साथ काम करते वक्त हमें बिलकुल उनके जैसे बनाना पड़ता है। तभी जाकर हम उन्हें समझ पाते हैं और इसके लिए हमें आराम की परिधि से बाहर निकलना पड़ता है। साथ ही हमें उन्हें अपने जैसा समझना पड़ता है वरना हम हमेशा उन्हें एक शिक्षक की तरह पढ़ाने में लगे रहते हैं जो फलदायी नहीं होता"।

स्कूल से बाहर भी कल्याण मनकोटी सामाजिक रूप से काफी सक्रिय रहते हैं। 2013 में उत्तराखण्ड में आई आपदा में कल्याण मनकोटि ने अपने निजी जीवन से वक्त निकालकर जरूरतमंदों की मदद की।

साल 2016 में कल्याण मनकोटी को उनके बेहतरीन कार्य के लिए राष्ट्रपति पुरस्कार से भी नवाजा गया है!

कल्याण मनकोटी की बच्चों के प्रति समझ, प्रयोगात्मक तरीके से काम करने की आदत और समाज को साथ लेकर चलने की विधा–यह सब कहीं न कहीं यह उम्मीद तो जगाती ही है कि शिक्षक अगर चाहे तो समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते है।

(कल्याण मनकोटी से हुई लोकेश ठाकुर की बातचीत पर आधारित)